Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

# मगध के अभिलेखः इतिहास और संस्कृति के पुरातात्त्विक स्रोत

**Ankita Singh**

NET- History, Address: Sitabadi william street karauli(raj.), Pin:322241

**प्रस्तावना**

प्राचीन भारत में बिहार का ऐतिहासिक महत्व अत्यंत गहरा और व्यापक रहा है। इसे प्राचीन काल में मगध के नाम से जाना जाता था, जो उस समय के सबसे शक्तिशाली और प्रतिष्ठित राज्यों में से एक था। बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है, और उनमें मगध सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा। इसका सबसे प्राचीन उल्लेख अथर्ववेद में पाया जाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उत्तर वैदिक काल तक मगध आर्य संस्कृति और प्रभाव के दायरे से बाहर था।

संस्कृत ग्रंथों में, विशेष रूप से अभिधान चिन्तामणि के अनुसार, मगध को 'कीकट' भी कहा गया है। यह क्षेत्र बुद्धकालीन समय में एक सशक्त राजतंत्र के रूप में उभरा, जो न केवल राजनीतिक शक्ति का केंद्र था, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण था। मगध की सीमाएँ उत्तर में गंगा नदी, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत, पूर्व में चम्पा और पश्चिम में सोन नदी तक फैली हुई थीं। इस विस्तृत भू–भाग की राजधानी गिरिव्रज (वर्तमान राजगीर) थी, जो अपने समय का एक प्रमुख नगर था।

मगध न केवल राजनीतिक और सैन्य दृष्टि से उन्नत था, बल्कि इसकी भौगोलिक स्थिति ने इसे व्यापार, संस्कृति और धर्म का केंद्र भी बनाया। यह क्षेत्र बौद्ध और जैन धर्म के विकास का भी केंद्र रहा। यहीं से महात्मा बुद्ध और भगवान महावीर ने अपने धर्म–उपदेशों का प्रचार किया। इस काल में मगध ने न केवल स्थानीय सत्ता को मजबूत किया, बल्कि इसे एक समृद्ध और संगठित राज्य के रूप में विकसित किया।

मगध का इतिहास न केवल प्राचीन भारत की राजनीतिक संरचना को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह उस काल की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति का भी परिचायक है। इस क्षेत्र ने शिक्षा, कला, वास्तुकला और दर्शन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया। इसकी विशिष्टता केवल इसके भौगोलिक विस्तार और राजनीतिक शक्ति तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह अपने समय की सभ्यता का एक समृद्ध उदाहरण भी प्रस्तुत करता था।

उपरोक्त जानकारी के लिए साहित्यिक स्त्रोत प्रमाण के रूप में उपलब्ध है। जिस प्रकार इतिहास को जानने के लिए साहित्य मददगार होते हैं, उसी प्रकार पुरातात्त्विक श्रोत अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं। भारत में ही नहीं अपितु भारत के बाहर भी विविध अभिलेख, सिक्के, मृदभाण्ड, भवनों के अवषेष आदि की प्रप्ति हुई है जो इतिहास निर्माण में सहायक होते हैं। पुरातात्तिवक उत्खनन तथा अनुसंधान के कारण इन साक्ष्यों के माध्यम से प्राचीन मगध का राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक स्थिति स्पष्ट होती है।

मगध के मिथिला क्षेत्र के कई स्थलों के उत्खननों से अनेक पुरातात्विक सामग्रीयाँ उपलब्ध हुई हैं। 1912–13 ई. में स्पूनर के द्वारा वैषाली नगर का उत्खनन कराया गया। इस क्रम में वैषाली से कई सांस्कृतिक स्तरों का पता चला। यह स्तर मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल था बना हुआ था। इस उत्खनन कार्य के दौरान जो सामग्रीयाँ प्राप्त हुई उनमें प्रमुख 235 पकी हुई मिट्टी की मुहरें हैं। इन मुहरों पर भिन्न–भिन्न चिन्ह अंकित थे। एक अन्य मुहर पर "भागवत आदित्य" लेख अंकित है। कनिंघम महोदय को यहाँ के उत्खन्न के समय गुप्त ब्राम्ही लिपि में 'श्री विदासत्स्य' लेख एक दावात के उपर अंकित मिला।

जयमंगलागढ़ (बेगुसराय) तथा नौलागढ़ से भी कई अभिलेख प्राप्त किये गये हैं। यह एक पुरातात्त्विक स्थल है। नौलागढ़ से अधिक संख्या में अभिलेखों की प्राप्ति हुई है। 1951 ई. में यहाँ से काले प्रस्तर निर्मित बुद्ध की प्रतिमा मिलि थी जिसपर दो पंक्तियों का लेख उत्कीर्ण है। इस लेख के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि यह अभिलेख विग्रहपाल तृतीय के 24 वें राजत्वकाल का है। एक अशोक नामक महिला का इसमें उल्लेख है जो धम्मजी नामक व्यक्ति की पत्नी तथा कृमिला नगर के शराब विक्रेता महामती की पूत्री थी, उसके द्वारा मूर्ति निर्माण करने का इस अभिलेख में उल्लेखहै। यहाँ से पकी मिट्टी की मुहरें भी प्राप्त हुई है।

वनगाँव से भी प्राचीन पुरातात्त्विक सामग्रीयाँ प्राप्त की गई है। यह सहरसा जिला, बिहार में अवस्थित है। यहाँ से विग्रहपाल तृतीय का एक तामपत्र प्राप्त हुआ है। इसकी खोज डी० सी० सरकार ने की। यह विग्रहपाल के शासन के 24 वें वर्ष में अंकित करवाया था। इसकी कुछ पंक्तियों में पाल शासक गोपाल के विषय में अंकित है। यह एक भूमिदान पत्र है। यह भूमिदान इटहका गाँव के धनवक श्रवण ब्राम्हण को दिया गया है। यह मूलतः कोलचा का रहने वाला था।

मिथिला के प्रसिद्ध गाँव पंचोभ दरभंगा जिला से पश्चिम–दक्षिण में स्थित है। यहाँ से खेत की जुलाई के समय किसी किसान को ताँबे का एक प्लेट प्राप्त हुआ था। इस प्लेट पर संस्कृत में 30 पंक्तियों में लेख अंकित है। इसका पाठ मैथिली में है। इसका महत्त्व इस संदर्भ में है कि यह लेखअशत शासक वंशों से परिचित कराता है। यह एक दानपत्र है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि जयपुर नामक एक नगर था जिसके राजा का नाम परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर तथा महामांडलिक संग्राम गुप्त था जो महेश्वर के भक्त थे।

इन अभिलेखों के अतिरिक्त, बिहार के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अन्य अभिलेखों ने भी इस प्रदेश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहलुओं को उजागर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कटरा अभिलेख से लेकर भीठ–भगवानपुर और अंधराठाढ़ी अभिलेख तक, ये सभी क्षेत्रीय अभिलेख उस काल की सामाजिक संरचना, प्रशासनिक व्यवस्था और धार्मिक गतिविधियों पर प्रकाश डालते हैं।

कन्दाहा अभिलेख और विस्फी ताम्रपत्र अभिलेख जैसे प्राचीन दस्तावेज हमें उस समय की भूमि व्यवस्था, राजस्व प्रणाली और स्थानीय प्रशासन की जानकारी प्रदान करते हैं। खोजपुर में प्राप्त दुर्गा प्रतिमा अभिलेख, इमादपुर की विष्णु एवं गणेश प्रतिमा, और भागीरथपुर अभिलेख उस समय के धार्मिक विश्वासों और मूर्तिकला की उन्नति को दर्शाते हैं। इसी प्रकार, बराँटपुर–चण्डीस्थान अभिलेख धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्रों के महत्व को उजागर करता है। इन अभिलेखों में

उल्लिखित घटनाएँ, व्यक्तित्व, और स्थान न केवल ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए उपयोगी हैं, बल्कि इनसे प्राचीन काल के बिहार की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का भी बोध होता है।

इनके अलावा, नालंदा से प्राप्त अनेक ताम्रपत्र और मुहरें इस क्षेत्र के राजनीतिक इतिहास और शासकीय संरचना के गहन अध्ययन का आधार प्रदान करती हैं। नालंदा में प्राप्त इन ताम्रपत्रों ने न केवल स्थानीय शासकों के आदेशों और घोषणाओं को संरक्षित किया, बल्कि यह भी दिखाया कि किस प्रकार शिक्षा और धर्म का प्रशासनिक स्तर पर समर्थन किया गया। अपसढ अभिलेख विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि यह न केवल स्थानीय प्रशासन और शासन की कार्यशैली को प्रकट करता है, बल्कि उस काल के आर्थिक और सामाजिक जीवन के पहलुओं को भी समझने में सहायक होता है।

इन अभिलेखों की विविधता और उनके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्राचीन बिहार केवल राजनीतिक शक्ति का केंद्र नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक गतिविधियों का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थल था। ये सभी अभिलेख इस क्षेत्र की समृद्ध विरासत और गौरवशाली अतीत को प्रमाणित करते हैं।

## संदर्भ सूची

1. चटर्जी, गौरीषंकर – हर्षवर्धन, इलाहाबाद, 1938
2. मुखर्जी, आर. के. – हर्ष, ऑक्सफोर्ड, 1926
3. मजूमदार, आर. सी. – दि क्लासिकल एज, बम्बई, 1954
4. शर्मा, वैधनाथ – हर्ष एण्ड हिज टाइम्स, वाराणसी, 1970
5. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति,
6. इलाहाबाद, 2007
7. उपेन्द्र ठाकुर, हिस्ट्र ऑफ मिथिला, पृ. 221–222
8. जी. डी. कॉलेज बुलेटिन नं० – 2, इन्स क्रिप्सन ऑफ बिहार
9. डी० सी. सरकार, द इविग्राफी इंडिका, भाग पृ. 86
10. शर्मा राम प्रकाष, मिथिला का इतिहास, दरभंगा, 1979, पृ. 182